कुछ प्रसिद्ध अंग्रेजी कविताओं का
हिन्दी में काव्यानुवाद

मकरंद

अनुवादक
वी. पी. गुप्ता

ANU BOOKS

प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं शिक्षाविद
डा० चन्द्र प्रकाश आर्य जी को
सादर भेंट

14-3-2021

कुछ प्रसिद्ध अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी में काव्यानुवाद

वी० पी० गुप्ता

Published By :

ANU BOOKS

Delhi Meerut Glasgow (UK)

Visit us: www.anubooks.com

मकरंद
First Published in 2020

ISBN: 978-81-948985-1-1
Book Code: AB159-D20

Price : 195 /-

Published by :
Ms. Kavita Mithal
Anu Books
Publishers & Distributors
H.O.: Shivaji Road, Meerut, 0121-4007472, 8800688996
Branch : Green Park Extension, New Delhi-110016, 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591
E-mail: anubooks123@gmail.com
Composing and Printing in India

दो शब्द

मुझमें अपने स्कूली दिनों से ही कविताएँ पढ़ने और सुनने की रूचि पैदा हो गई थी। उन दिनों देहरादून में काव्य गोष्ठियों और कवि सम्मेलनों के आयोजन बड़ी संख्या में होते थे और बाहर से भी ख्याति प्राप्त कविगण पधारकर काव्य–रस वर्षा किया करते थे। इसका रचनात्मक प्रभाव साहित्य में रुचि रखने वाले छात्रों पर पड़ना स्वाभाविक था। बड़ी कक्षाओं तक पहुँचते–पहुँचते मैं भी कुछ तुकबन्दी करने लगा था और इस प्रवृत्ति को स्कूल–कॉलेज पत्रिकाओं ने प्रोत्साहन दिया था। मुझे सदैव से तुकान्त व मात्रिक अनुशासन में बद्ध कविताएँ ही प्रिय रही हैं, अतुकान्त व गद्यात्मक कविताओं को मैं कभी सराह नहीं पाया। कविता में उक्ति वैचित्रय और भाव–संयोजन के साथ ही भाषा–माधुर्य और रस की अपेक्षा की जाती है, यही कविता की विशेषता कहलाई जाती है।

अध्ययन काल में कुछ ऐसा योग बना कि मुझे अंग्रेजी साहित्य का गहराई से अध्ययन करने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ। अंग्रेजी भाषा के कई प्रतिष्ठित कवियों की कालजयी रचनाओं को पढ़ते समय मैंने पाया कि अनेक विषयों पर उनके विचार भारतीय दर्शन और विचार धारा से मेल खाते हैं। आत्मा की अमरता, शरीर की नश्वरता, भौतिक वादी जीवन की निस्सारता, मृत्यु की शाश्वत प्रकृति, सुखी जीवन का रहस्य, कर्मों की महत्ता जैसे अनेक विषयों पर कुछ अंग्रेजी भाषा की कविताओं ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

यथा, *रखवाले के कोड़े व्यर्थ थे, दिन की तेज गरमी बेमानी,*
उसकी नींद बनी चिर निद्रा, केवल देह पड़ी निष्प्राणी,
टूटी बेड़ी जैसी, जिसको आत्मा तोड़ उड़ी अभिमानी।

H.W. Longfellow (Slave's Dream)

और,

चेहरे पर पड़ जायें झुर्री तो बाहुबल की डींग न मारो,
विजयी–विजित के रक्त से रंजित, मृत्युवेदी की ओर निहारो,
ठण्डे चरणों में मृत्यु के, मस्तक हो मजबूर झुकेंगे,
सुरभित होंगे कर्म सुजन के, और मिट्टी में फूल उगेंगे।

–James Shirley in (Dealth, the Leveller).

इस तथ्य से प्रभावित होकर, मैंने स्वयं के आनन्द के लिए कुछ चयनित अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी में काव्यानुवाद करना प्रारम्भ कर दिया। अनेक चर्चित कविताओं का हिन्दी में काव्यानुवाद करके मुझे निस्संदेह आनन्द व सन्तोष की

प्राप्ति हुई और इसी सुख, आनन्द व सन्तोष को अपने साहित्यिक मित्रों से साझा करने के लिए मैंने कुछ चुनी हुई अंग्रेजी भाषा की कविताओं के अनुदित रूप को **'मकरंद'** नाम से प्रकाशित करने का निश्चय किया। मैंने इस बात का पूरा प्रयास किया है कि मूल कविता के भाव, अभिव्यक्ति, शैली और अर्थ में बदलाव न हो और अनुदित रचना में मूल रचना की प्रभावोत्पादकता बनी रहे। जिज्ञासु पाठकों के संतोष के लिए अनुदित रचना के साथ मूल रचना भी दे दी गई है।

मैं इस संकलन **'मकरंद'** का इतना सटीक, सुन्दर व समीक्षात्मक परिचय लिखने के लिए अंग्रेजी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान, वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं कवि–हृदय **डॉ० राजहंस गुप्ता** का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इतनी अधिक रुचि लेकर मेरी इन अनुदित रचनाओं को पढ़ा और अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये।

साथ ही, इस कार्य के सम्पादन के प्रति मुझे निरन्तर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए मैं अपने सभी मित्रों, शुभचिन्तकों एवं परिवारजन का भी आभार प्रकट करता हूँ।

मुझे आशा है कि सुविज्ञ पाठकों को इस संकलन में मकरंद की सुगंध की अनुभूति अवश्य होगी।

जाटान स्ट्रीट
बिजनौर (उ०प्र०)

वी०पी०गुप्ता

मकरंद की सुगंध

भाषा की काव्यमय उर्जा जब उत्कर्ष पर होती है तो भावों की अभिव्यक्ति को समृद्ध बना देती है। प्रस्तुत काव्य संकलन **मकरंद** में कविवर श्री वी०पी० गुप्ता द्वारा अंग्रेजी से हिन्दी में अनुदित रचनाओं को पढ़कर ऐसी ही अनुभूति होती है। उन्होंने ख्याति प्राप्त अंग्रेजी कवियों की कुछ प्रसिद्ध कविताओं का जिस कुशलता के साथ हिन्दी में काव्यानुवाद किया है, वह इस संग्रह के नाम **'मकरंद'** को सार्थकता प्रदान करता है। मूल रचना के मधुर रस को अनुदित रचना के माध्यम से रसिक पाठकों तक पहुँचाने वाले इस अनूठे काव्य–संकलन **'मकरंद'** को प्रस्तुत करने के लिए श्री वी०पी० गुप्ता बधाई के पात्र हैं। ऐसा इसलिए संभव हो सका है क्योंकि श्री गुप्ता जहाँ एक ओर अंग्रेजी व हिन्दी, दोनों भाषाओं के साहित्य में गहरी पैठ रखते हें, वहीं वे एक कुशल कवि भी हैं।

एक भाषा की काव्य रचना का दूसरी भाषा में अनुवाद करना, और वह भी काव्य रूप में, एक जटिल कार्य है। अनुवादक के सामने कई चुनौतियाँ होती हैं, जैसे अनुदित रचना में मूल रचना की मौलिकता बनाये रखना, उसके भाव, अर्थ व संरचना के साथ छेड़खानी न करना, मूल रचना के काव्याकाश में ही अपनी उड़ान सीमित रखना, इत्यादि। श्री वी०पी० गुप्ता ने इन सब चुनौतियों का सामना करते हुए जिस कुशलता के साथ इस कार्य को सम्पन्न किया है, वह इस क्षेत्र में उनकी दक्षता का साक्षी है।

लौकिक व अलौकिक, जिन द्वंदों से मानव जीवन का ताना–बाना बुना जाता है, वे देश, काल, भाषाओं की सीमाओं में बंधे नहीं होते। श्री गुप्ता ने अपने काव्यानुवादों के माध्यम से हिन्दी पाठकों को इस तथ्य से अवगत कराया है। इंग्लिश कवि ऐलेक्जेन्डर पोप की निम्न पंक्तियों का काव्यानुवाद इस प्रकार पढ़कर पाठक आनन्दित होता है–

Sound sleep by night, study and ease
Together mixt, sweet recreation,
And innocence which most does please
With meditation. ***(Happy the man)***

काव्यानुवाद

रात्री गहरी नींद में सोता,
करे स्वाध्याय से मन–रंजन
निश्चल मन से, आनन्दित हो
करता जो आध्यात्मिक चिंतन।

इसी प्रकार, विलियम काउपर की निम्न पंक्तियाँ भी उदाहरण स्वरूप ली जा सकती हैं–

There is mercy in every place,
And mercy, encouraging thought,
Gives even affliction a grace
And reconciles man to his lot.

(Solitude of Alexander Selkirk)

काव्यानुवाद–

सभी कहीं हैं दया प्रभु की,
यही ह्रदय में साहस भरती,
सिखलाती कष्टों को सहना,
हमको भाग्य–संतोषी करती।

संक्षेप में कहा जाये तो श्री वी०पी० गुप्ता ने अपने हिन्दी पाठकों को अंग्रेजी भाषा में लिखित कुछ प्रसिद्ध कविताओं का रसास्वादन करने का सुअवसर प्रदान किया है। हम सबने बचपन में 'Twinkle, Twinkle, little Star' कविता बार–बार गाई थी। इस संकलन में इसका हू–ब–हू हिन्दी अनुवाद पढ़कर ह्रदय में गुदगुदी पैदा होना स्वाभाविक है–

झिलमिल, झिलमिल, नन्हें तारे,
विस्मित हूँ, तू है क्या प्यारे!
धरती ऊपर इतने ऊँचे,
आसमान में हीरा जैसे!

गंगा जी में एक ही बार गोता लगाने से हमारी तृप्ति नहीं होती, बार–बार गोता लगाने को मन चाहता है। मकरंद की इन सुवासित रस बूंदों को जितना ही हम चखते हैं, उतना ही अधिक हमारी प्यास बढ़ती प्रतीत होती है। इस सुफलित श्रम के लिए मैं कवि को बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है सुविज्ञ पाठक इस पुस्तक का ह्रदय से स्वागत करेंगे।

पंचवटी कॉलोनी
सिविल लाइन, बिजनौर (उ०प्र०)
मो० : 9927402211

डॉ० राजहंस गुप्ता
(पूर्व अंग्रेजी विभागाध्यक्ष)
वर्धमान (पी०जी०) कॉलेज, बिजनौर

विषय सूची

मकरंद

Where the Mind is Without fear

–Rabindra Nath Tagore

Where the mind is without fear
And the head is held high,
Where knowledge is free,
Where words come out from the depth of truth,
Where the world is not broken into
fragments of narrow domestic walls,
Where clear stream of reason has not lost
its way into the dreary sands of dead habits,
Where tireless striving stretches its arms
towards perfection,
Where the mind is led forward by thee
into ever widening thought and action,
Into that heaven of freedom, my father,
let my country awake.

मन हो भय से मुक्त जहाँ पर

रवीन्द्र नाथ टैगोर

मन हो भय से मुक्त जहाँ पर
और गर्व से सिर उन्नत हो,
ज्ञान सभी को सहज सुलभ हो,
मन और वाणी सत्य सिक्त हो,
जहाँ न विश्व संकीर्ण हितों में
खण्ड–खण्ड होकर विभक्त हो,
जहाँ विवेक की निर्मल धारा
शुष्क प्रथाओं के मरुथल में
बहे अबाध, नहीं अवरुद्ध हो,
अथक प्रयासों के बल पर ही
पूर्ण उपलब्धि जहाँ लक्ष्य हो,
जहाँ करे तू मन को अग्रसर
ऐसे कर्म विचारों के प्रति
व्यापकता की ओर निरन्तर,
स्वतन्त्रता के उसी स्वर्ग में
मेरे देश को, प्रभु, जागृत कर!

Play Things

–Rabindra Nath Tagore

Child, how happy you are sitting in the dust,
playing with a broken twig all the morning.
I smile at your play with that little bit
of a broken twig.
I am busy with my accounts,
adding up figures by the hour
Perhaps you glance at me and think,
What a stupid game to spoil your morning with!
Child, I have forgotten the art of being
absorbed in stick and mud pies,
I seek out costly play things,
and gather lumps of gold and silver.
With whatever you find you create
your glad games,
I spend both my time and my strength
over things I can never obtain.
In my frail canoe I struggle to cross
the sea of desire and forget that
I, too, am playing a game.

खिलौने

–रवीन्द्र नाथ टैगोर

बच्चे, तुम कितने खुश होकर
खेल रहे बैठे मिट्टी में,
टूटी टहनी लेकर के ही
बिता दिया है सभी सवेरा।
मुस्काता मैं देख रहा हूँ
मग्न तुम्हें टूटी टहनी में,
मैं व्यस्त धन के अर्जन में
मुझको तो माया ने घेरा।
शायद् सोच रहे तुम मुझको
देख कि मैं हूँ कैसा मूरख,
नासमझी के खेल में कैसा
गंवा रहा हूँ सुखद सवेरा।
पर बच्चे! मैं भूल चुका हूँ
कंकड़, मिट्टी में रम जाना,
मूल्यवान खिलौने, सोना
चांदी बना ध्येय अब मेरा।
जो कुछ भी मिल जाता तुमको
खेल गढ़ो उससे मन चाहे,
मैं शक्ति और समय गंवाता
फिर भी लक्ष्य दूर है मेरा।
जीर्ण नाव में जूझ रहा हूँ
तरने इच्छाओं का सागर,
और भूल जाता हूँ यह मैं
खेल ही तो है जीवन मेरा।

The Coming of Spring

–Sarojini Naidu

O Spring ! I cannot run to greet
Your coming as I did of old,
Clad in a shining veil of gold,
With Champa buds and blowing wheat
And silver anklets on my feet.

O sweet ! I am not false to you,
Only my weary heart of late
Has fallen from its high estate
Of laughter and has lost the clue
To all the vernal joys it knew.

There was a song I used to sing,
But now I seek in vain, in vain,
For the old lilting glad refrain,
I have lost every thing,
Forgive me, O my Comrade Spring!

हे बसन्त

—सरोजिनी नायडु

हे बसंत! अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊँगी अभिनन्दन,
जैसा मैं करती थी पहले
पहन चमकती साड़ी स्वर्णिम।
चम्पा की कलियां, गेहूँ की
लहराती बालें हाथों में
चांदी के घुंघरू पैरों में
बजते जाते झनन–झनन झन
हे बसंत! अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊँगी अभिनंदन!

प्रियतम! ऐसा समझ न लेना
मेरी तुमसे प्रीति थी झूठी
केवल समय के बटमारों ने
मेरी खुशी की गठरी लूटी
पीड़ा से मन व्याकुल मेरा
भूला सब बासंती खुशियाँ
जन मानस को देख दुःखी, अब
मेरा मन करता है क्रंदन
हे बसंत! अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊँगी अभिनंदन!

प्रिय! जब तू आता था पहले
तन–मन पुलक–पुलक जाता था
एक गीत तब बड़ा मधुर–सा
होठों पर बरबस आता था
बार–बार अब यत्न करूँ पर
धुन वह मीठी याद न आये
क्षमा मुझे करना, प्रिय साथी
भूल गया सब कुछ बोझिल मन
हे बसंत! अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊँगी अभिनंदन!

The poet to Death

–Sarojini Naidu

Tarry awhile, O Death,
I cannot die
While yet my life burgeons with its Spring;
Fair is my youth, and
rich the echoing boughs
Where dhadikulas sing.

Tarry a while, O Death
I cannot die
With all my blossoming hopes unharvested,
My joys ungarnered,
All my songs unsung
And all my tears unshed.

Tarry awhile till I am satisfied
Of love and grief, of earth and altering sky,
Till all my human hungers
are fulfilled,
O Death, I cannot die.

मृत्यु, ठहर जा तनिक

–सरोजिनी नायडु

मृत्यु, ठहर जा तनिक
अभी मैं मर न सकूंगी

मेरे जीवन में बहार बासंती छाई
महक रही मेरी यह अभिनव तरुणाई
गूंज रही चिड़ियों की मीठी तानों से
लदी हुई डालें, पुष्पों से बौराई
विस्मृत इनको कर न सकूंगी
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

मेरी आशाओं पर मोहक फूल खिले अब
उन्हें बीनना अभी, सहेजनी खुशियां हैं सब
गीत अभी रह गए बहुत से अनगाये
अश्रु रहे अनबहे कि अटका अभी नीर दृग
अनदेखा यह कर न सकूंगी।
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

जब तक सारे गीत न गा लूं मैं जी भर के
प्रेम–विरह के, धरा के, इस नीले अम्बर के
जब तक तृप्त न कर लूं सब अभिलाषाएँ
सभी अधूरे सपने अपने, मन भर के
तब तक तुझको वर न सकूंगी
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

Blow, Blow, Thou Winter Wind

–William Shakespeare
English poet

Blow, blow, thou winter wind
Thou art not so unkind
As man's ingratitude.
Thy tooth is not so keen
Because thou art not seen
Although thy breath be rude.
Heigh Ho! sing Heigh Ho! unto the green holly,
Most friendhsip is feigning, most loving mere folly,
Then, Heigh Ho! the holly,
This life is most jolly.

Freeze, freeze, thou bitter sky
Thou dost not bite so nigh
As benefits forgot.
Though thou the waters warp,
Thy sting is not so sharp
As friend remembered not.
Heigh Ho, sing Heigh Ho, unto the green holly,
Most frienship is feiging, most loving mere folly,
Then Heigh Ho! the holly,
This life is most jolly.

ओ शीत पवन! तुम बहो, बहो

विलियम शेक्सपीयर

ओ शीत पवन! तुम बहो, बहो
तुम तो इतने निर्दयी न हो
जितनी व्यक्ति की कृतघ्नता
नहीं घात तुम्हारी है तीखी
क्योंकि रहते अनदेखे ही
यद्यपि स्वयं तुम में तीक्षणता
आओ, आओ, मिलकर गाएं हरे कुंज के चारों ओर
अधिक मित्रता धोखा है, अधिक प्रेम दुर्बुद्धि घोर।
ओ हो, कुंज के चारों ओर, नाचे जीवन का यह मोर!

ओ हिममय नभ, तुम जमो जमो
नहीं देते इतनी पीड़ा हो
जितनी उपकार की विस्मृतता
यद्यपि गतिहीन करो जल भी
इतने दुःख दायी नहीं फिर भी
जितनी बिसराई हुई मित्रता
आओ, आओ, मिलकर गाएं हरे कुंज के चारों ओर
अधिक मित्रता धोखा है, अधिक प्रेम दुर्बुद्धि घोर।
ओ हो, कुंज के चारों ओर, नाचे जीवन का यह मोर!

Under the Greenwood Tree

William Shakespeare
English poet

Under the greenwood tree
Who loves to lie with me
And turn his merry note
Unto the sweet bird's throat,
Come hither, come hither, come hither,
Here shall he see
No enemy
But winter and rough weather.

Who doth ambition shun
And loves to live in the shun,
Seeking the food he eats
And pleased with what he gets,
Come hither, come hither, come hither
Here shall he see
No enemy
But winter and rough weather.

ग्रीनवुड के हरे–भरे पड़े के तले

–विलियम शेक्सपीयर

ग्रीन वुड के हरे–भरे पेड़ के तले
कौन है जो संग मेरे लौटने चले।

प्रसन्न मन से कंठ को उन्मुक्त उठा के
पक्षियों के स्वर में अपने स्वर को मिला के
मस्ती भरा कोई मधुर गीत जो गाये
इधर आये, इधर आये, वह इधर आये।
यहां न शत्रु कोई भी उसका उसे दले
केवल खराब मौसम और सर्दी यहां मिले
ग्रीनवुड के हरे भरे पेड़ के तले
कौन है जो संग मेरे लौटने चले।

ऊँची आकांक्षा न जिसके दिल को भरमाएँ
प्रकृति की गोद में रहना जिसे भाए
कर परिश्रम जीविका अपनी कमाता हो
जो मिले उसमें सदा संतोष पाता हो
दूर सारे झंझटों से रहना जो चाहे
इधर आये, इधर आये, वह इधर आये।
यहां न शत्रु कोई भी उसका उसे दले
केवल खराब मौसम और सर्दी यहां मिले
ग्रीनवुड के हरे भरे पेड़ के तले
कौन है जो संग मेरे लौटने चले।

Man of Life Upright

–Thomas Campion
English poet

The man of life upright
Whose guiltless heart is free
From all dishonest deeds
Or thought of vanity;
The man whose silent days
In harmless joys are spent,
Whom hopes cannot delude,
Nor sorrow discontent:
That man needs neither towers
Nor armour for defence,
Nor secret vaults to fly
From thunder's violence:
Thus scorning all the cares
That fate or fortune brings,
He makes the heaven his book,
His wisdom heavenly things;
Good thoughts his only friends,
His wealth a well-spent age,
The earth his sober inn
And quiet pilgrimage.

निर्मल जीवन

—थामस कैम्पियन

व्यक्ति जिसका जीवन निर्मल
और हृदय निष्कपट, मुक्त है
सभी भांति के भ्रष्ट कृत्यों से,
दम्भ, घमंड से नहीं युक्त है।

शान्त, सहज है जिसका जीवन
सानन्द बीत रहा निश्छल है,
भ्रमित नहीं जो आशाओं से,
नहीं दुःखों से जो विव्हल है।

उस व्यक्ति को नहीं चाहिए
कोई सुरक्षा, कवच, दुर्ग की,
बचने को हिंसा—ताण्डव से
नहीं जरुरत गुप्त कक्ष की।

सदा मुक्त सब चिन्ताओं से
भाग्य—अभाग्य वश जो आयें,
प्रभु—दर्शित पथ अनुसरण कर
ज्ञान और बुद्धि नित पाये।

सद्—विचार ही मित्र हैं उसके,
सरल, सहज जीवन उसका धन,
पृथ्वी उसका शान्त बसेरा,
यही सुखद उसका तीर्थाटन।

Noble Nature

–Ben Jonson
English poet

It is not growing like a tree
In bulk doth make man better be;
Or standing long an oak, three hundred years
To fall a log at last, dry, bold and sere.
A lily of a day
Is fairer far in May
Although it fall and die that night–
It was the plant of flower of light.
In small proportions we just beauties see;
And in small measures life may pefect be.

नेक जीवन

—बेन जानसन

वृहद तन पाकर वृक्ष सरीखा
व्यक्ति बड़ा नहीं हो जाता,
जो शतकों तक खड़ा ओक—सा,
गिरे अंत में शुष्क ठुंठ—सा।

कहीं सुन्दर है फूल लिली का
मई माह में एक दिवस का।
उसी रात यद्यपि गिर जाता
पर, दिन भर सबको हर्षाता।
छोटी चीजों में भी सौन्दर्य झलकता है,
लघु जीवन भी सम्पूर्ण हो सकता है।

Death, The leveller

–James Shirley
English poet

The glories of our blood and state
Are shadows, not substantial things,
There is no armour against fate,
Death lays his icy hands on kings.
Sceptre and crown
Must tumble down,
And in the dust be equal made
With the poor scythe and spade.
Some men with swords may reap the field
And plant fresh laurels where they kill,
But their strong nerves at last will yield,
They tame but one another still.
Early or late
They stoop to fate,
And must give up their murmuring breath
Where they, pale captives, creep to death.
The garlands wither on your brow
Then boast no more your mighty deeds;
Upon death's purple altar now
See where the victor-victim bleeds.
Your heads must come
To the cold tomb;
Only the actions of the just
Smell sweet, and blossom in their dust.

मृत्यु, समतलकर्त्री

–जेम्स शर्ले

शान हमारे वंश की, धन की
नहीं वास्तविक, है छाया भर
नियति से नहीं त्राण, नृपो पर
रखती मृत्यु निज शीतल कर।
राज दंड और मुकुट सभी बिस्मार होंगे
मुड़ी दराती और कुदाली के संग एकाकार होंगे।

यश–वृक्ष कोई रोप भले दे
रण क्षेत्र में असि के बल पर
शक्ति थकेगी उनकी अन्ततः
मात्र जमाते धाक परस्पर
भले देर से या जल्दी ही, भाग्य समक्ष घुटने टेकेंगे।
छोड़ अटकती सांस, मृत्यु के बन दुर्बल कैदी रेंगेंगे।

चेहरे पर पड़ जायें झुर्री तो
बाहुबल की डींग न मारो
विजयी–विजित के रक्त से रंजित
मृत्यु वेदी की ओर निहारो।
ठंडे चरणों में मृत्यु के
मस्तक हो मजबूर झुकेंगे
सुरभित होंगे कर्म सुजन के
और मिट्टी में फूल उगेंगे।

On His Blindness

John Milton
English Poet

When I consider how my light is spent
Ere half my days, in this dark world and wide,
Lodged with me useless, though my soul most bent
To serve therewith my Maker and present
My true account,lest he returning chide—
Doth God exact day-labour, light denied ?
I fondly ask.
But patience, to prevent
that murmur, soon replies; God doth not need
Either man's work, or His own gifts, who best
Bear His mild yoke, they serve Him best,
His state is kingly, thousands at His bidding speed
And post over land and ocean without rest—
They also serve who only stand and wait.

अपनी दृष्टि हीनता पर

—जॉन मिल्टन

जब विचारता, दृष्टि मेरी अर्द्ध आयु में लुप्त हो गई,
बिना दृष्टि अब इस विस्तृत संसार में
जीवन मुझे बिताना होगा अंधकार में,
मेरी जन्म जात प्रतिभा भी मृत्यु पर्यन्त सुप्त हो गई
जिससे प्रभु सेवा की थी मेरी कामना
कहीं न क्रुद्ध प्रभु हो जायें मुझसे,
पर, क्या मेरी दृष्टि को अवरुद्ध करके
चाहते हैं प्रभु, करूँ मैं भक्ति साधना?
तभी धैर्य ने झट रोका मेरा विद्रोही स्वर,
नहीं चाहिए प्रभु को किसी व्यक्ति की भक्ति,
उसके दिये कष्ट सहना भी सेवा सच्ची,
प्रभु का राज्य विशाल, उसके निर्देशों पर
जल–थल में असंख्य जीव सदा उद्यत हैं,
वे भी सेवा में हैं, जो खड़े प्रतीक्षारत हैं।

Happy the man

–Alexander Pope
English Poet

Happy the man whose wish and care
A few paternal acres bound,
Content to breathe his native air
In his own grounds.

Whose herds with milk, whose fields with bread,
Whose flocks supply him with attire,
Whose trees in summer yield him shade,
In winter fire.
Blest who can unconcern'dly find
Hours, days, and years slide soft away,
In health of body, peace of mind,
Quiet in day.

Sound sleep by night, study and ease
Together mixt, sweet recreation,
And innocence, which most does please
With meditation.

Thus let me live, unseen, unknown,
Thus unlamented let me die,
Steal from the world, and not a stone
Tell where I lie.

सुखी व्यक्ति

—एलैक्जेन्डर पोप

सुखी वही जिसकी अभिलाषा
कुछ पैतृक भूमि तक सिमटी,
सन्तुष्ट जो निज परिवेश में
प्रिय जिसको अपनी ही मिट्टी।

निज पशुओं से दुग्ध, और
वस्त्र पाता है जो निज भेड़ों से,
गरमी में छाया, सरदी में
पाता ईंधन निज पेड़ों से।

सुखी वही जो निश्चिंत होकर
समय बिताता सहज सरल ही,
तन स्वस्थ, मन स्वस्थ है जिसका
दिन बीते जिसके अविकल ही।

रात्रि गहरी नींदमें सोता,
करे स्वाध्याय से मन रंजन
निश्छल मन से, आनन्दित हो
करता जो आध्यात्मिक चिन्तन।

ऐसे ही अपरिचित, अनजाना
रह मैं भी जीना चाहता,
ऐसे ही चाहता हूँ जाना
पीछे छोड़ न अता-पता।

The Solitude of Alexander Selkirk

-William Cowper
English poet

I am monarch of all I survey,
My right there is none to dispute,
From the centre all round the sea
I am lord of the fowl and the brute.
O Solitude! where are the charms
That sages have seen in thy face?
Better dwell in the midst of alarms
Then reign in this horrible place.

I am out of humanity's reach,
I must finish my journey alone,
Never hear the sweet music of speech,
I start at the sound of my own;
The beast that roam over the plain
My form with indifference see,
They are so unacqainted with man,
Their tameness is shocking to me.

Society, friendship and love,
Divinely bestowed upon man
Oh! had I the wings of a dove,
How soon would I taste you again!
My sorrows then I might assuage
In the ways of religion and truth,
Might learn from the wisdom of age
And be cheer'd by the sallies of youth.

Cont....

एलैक्जेन्डर सैल्कर्क का एकाकीपन

—विलियम काउपर

एक छत्र राजा हूं सबका जो कुछ पड़ता मुझे दिखाई
मेरे दावे को झुठलाये, ऐसा कोई यहां कहां है?
इस द्वीप से लेकर फैले उस सागर में दूर–दूर तक
मैं ही स्वामी हूँ उन सबका जितने भी पशु–पक्षी यहां हैं।

हे निर्जनता! बता कहां वे आकर्षण हैं
तेरे में जो पाये थे ऋषियों–मुनियों ने?
राज्य करूँ इस भूतही टापू पर, इससे
कहीं बेहतर है जीना जग के संघर्षों में।

कोई मानव मुझ तक अब न पहुँच सकेगा
जीवन यहीं बिताना मुझे अकेले रहकर
मानव–वाणी का मधु रस अब चख न सकूंगा
चौंका देता है मुझको तो अपना ही स्वर।

इधर–उधर जो घूम रहे हैं पशु यहां पर
समझ मुझे भी अपना–सा ही, करें उपेक्षा
मानव से तो बिल्कुल भी ये भिज्ञ नहीं हैं
खलती मुझको बहुत अधिक इनकी निर्भयता।

समाज, मित्रता और प्यार
हैं दैवीय उपहार मनुष्य को,
काश, कि पंख होते पक्षी सम
पाता जल्दी ही फिर सबको।

हल्की करता निज व्यथायें
सत्य, धर्म, का कर अनुसरण
ज्ञान सीखता वृद्ध जन से
युवा शरारतें बहलाती मन।

क्रमश....

Ye winds that have made me your sport,
Convey to this desolate shore
Some cordial endearing report
Of a land I shall visit no more.
My friends, do they now and then send
A wish or a thought afte me?
O tell me I yet have a friend
Though a friend I am never to see.

How fleet is a glance of the mind!
Compared with the speed of its flight,
The tempest itself lags behind
And the swift-winged arrows of light.
When I think of my own native land
In a moment I seem to be there,
But alas! recollection at hand
Soon hurries me back to despair.

But the sea-fowl is gone to her nest,
The beast is laid down in her lair,
Even here is a season of rest,
And I to my cabin repair.
There's mercy in every place
And mercy, encouraging thought!
Gives even affliction a grace
And reconciles man to his lot.

हे पवन! बना तू मुझे खिलौना लाया है
तू ही अब इस निर्जन टापू तक पहुंचा
कुछ अच्छी खबरें मुझ तक मेरी धरती की
जिसे न फिर से देख पाऊँगा मैं अब, हा!
क्या मेरे मित्र वहां पर मेरे बारे में
सोचते भी हैं, करते मुझको याद कभी?
क्या कोई मेरा मित्र वहां पर अब भी है ?
हा! नहीं अब उससे हो पाएगी भेंट कभी।

तेज बहुत मन की उड़ान है,
अंधड़ भी पीछे रह जाये
उसकी तेज गति से तुलना
कभी प्रकाश भी न कर पाये
ध्यान करूं जब जन्मभूमि का
पाता स्वयं को तुरंत वहां पर
पर, अफसोस, यथार्थ अंत में
लाता फिर से खींच यहां पर।

अब जल–पक्षी गए नीड़ में
पशुओं ने भी किया बसेरा
यहां भी एक विश्राम काल है
मुझे बुलाता मेरा डेरा।

सभी कहीं है दया प्रभु की
वही हृदय में साहस भरती
सिखलाती कष्टों को सहना
हमको भाग्य–संतोषी करती।

A Cradle Song

–William Blake
English Poet

Sleep, sleep, beauty bright,
Dreaming in the joys of night,
Sleep, sleep, in thy sleep
Little sorrows sit and weep.

Sweet babe, in thy face
Soft desires I can trace,
Secret joys and secret smiles,
Little pretty infant wiles.

As thy softest limbs I feel,
Smiles as of the morning steal,
Over thy cheeks, over thy breast
Where thy little heart doth rest.

Oh! the cunning wiles that creep
In thy little heart asleep!
When thy little heart doth wake
Then the dreadful light shall break.

लोरी गीत

–विलियम ब्लैक

सो जा, सुन्दर बबुए, सोजा
रात के सुख–सपनों में खो जा
सो जा, तेरी नींद में आयें
नन्हें गम, निज व्यथा सुनाएँ।

तेरे चेहरे पर प्रतिबिम्बित
नन्हीं इच्छाएँ तेरे मन की,
छिपी प्रसन्नता, मुस्कराहटें,
नन्हीं शरारतें छुटपन की।

कोमल अंग छुऊँ जब तेरे,
प्रातः किरण–सी स्मिति फैले
तेरे गालों पर, छाती पर
नन्हा हृदय है जिसके भीतर!

कहाँ से यह शैतानी आती,
नींद में ही हिय में घुस जाती,
जब नन्हा हृदय जागेगा,
कटु यथार्थ को तब जानेगा!

The Daffodils

–William Wordsworth
English Poet

I wandered lonely as a cloud
That floats on high o'er vales and hills,
When all at once I saw a crowd,
A host of golden daffodils,
Beside the lake, beneath the trees,
Fluttering and dancing in the breeze.

Continuous as the stars that shine
And twinkle on the milky way,
They stretch'd in never ending line
Along the margin of a bay;
Ten thousand saw I at a glance
Tossing their heads in sprightly dance.

The waves beside them danced, but they
Out-did the sparkling waves in glee–
A poet could not but be gay
In such a jocund company!
I gazed and gazed - but little thought
What wealth the show to me had brought;

For oft, when on my couch I lie
In vacant or in pensive mood,
They flash upon that inward eye
Which is the bliss of solitude;
And then my heart with pleasure fills,
And dances with the daffodils.

फूल डेफोडिल के

—विलियम वर्ड्सवर्थ

मैं बादल—सा घूम रहा था एकाकी,
विचरता जो ऊँचा घाटी, पर्वत पर,
अकस्मात ही पहुँच गई दृष्टि मेरी
झुंड के झुंड उगे सुनहरे डेफोडिल्स पर,
वृक्षों के नीचे फैले थे झील किनारे,
नाच रहे थे हवा में फर—फर मिल सारे।

लगातार जो तारे करते हैं चम—चम,
झिल—मिल करते नभ में तारा पंक्ति में,
खिले हुए थे झील किनारे, दूर तलक,
फैले थे वे एक अनन्त—सी पंक्ति में।
दस सहस्त्र देखे मैंने एक दृष्टि में,
झूम—झूम कर नाच रहे थे मस्ती में।

नाच रही थीं संग किनारे पर लहरें,
पर, उमंग में छोड़ा उनको भी पीछे,
कवि का पुलकित हो जाना स्वाभाविक है
इतनी सुन्दर आनन्दमयी संगति में।
देखता ही रहा, उस समय जान न पाया,
इस मोहक दृश्य से मैंने क्या कुछ पाया।

क्योंकि, अक्सर जाता हूँ जब शय्या पर,
कुछ उदासी में, या रिक्त—विरक्त मन से,
कौंधने लगते मन की आँखों के आगे,
मेरे सूनेपन को आनन्द से वे भरते,
और हृदय में तब भर जाती एक उमंग,
नर्तन करता वह भी डेफोडिल्स के संग।

The World is too Much With us

–William Wordswoth
English poet

The world is too much with us; late and soon,
Getting and spending, we lay waste our powers;
Little we see in nature that is ours,
We have given our hearts away, a sordid boon!

The sea that bares her bosom to the moon,
The winds that will be howling at all hours
And are up-gather'd now like sleeping flowers,
For this, for every thing, we are out of tune;

It moves us not—Great God! I'd rather be
A pagan suckled in a creed out worn,
So might I, standing on this pleasant lea,
Have glimpses that would make me less forlorn;
Have sight of Proteus rising from the sea;
Or hear old Triton blow his wreathed horn.

भौतिकता में लिप्त अधिक हम

–विलियम वर्ड्सवर्थ

भौतिकता में लिप्त अधिक हम, दिन और रात,
धन के अर्जन–व्यय में अपनी शक्ति गंवाते,
प्रकृति–अवलोकन से अपनी दृष्टि चुराते,
हृदय हमने बेच दिया, क्या ही अभिशाप!

सागर की लहरें आकृष्ट हैं चन्दा के प्रति,
तेज हवाएँ जो सारा दिन शोर मचातीं,
और सिमट जातीं फिर सुप्त सुमन की भांति,
इन सबमें नहीं रही हमारी अब कोई रुचि।

यह सब हमें न भाता, प्रभु, होता है मन,
पुरा–धर्म विश्वासी, मूर्ति–पूजक मैं होता,
यहाँ प्रकृति बीच खड़ा आनन्दित होता,
दृश्य देखता, करते मेरा एकाकी–पन कम।

सागर से उठते प्रोटियस के दर्शन करता,
या वृद्ध ट्रीटन का सिंघा–वादन सुनता।

The Scholar

–Robert Southey
English Poet

My days among the dead are past,
Around me I behold,
Wherever these casual eyes are cast,
The mighty minds of old.
My never-failing friends are they,
With whom I converse day by day.

With them I take delight in weal
And seek relief in woe,
And while I understand and feel
How much to them I owe,
My cheeks have often been bedewed
With tears of thoughtful gratitude.

My thoughts are with the dead, with them
I live in long past years,
Their virtues love, their faults condemn,
Partake their hopes and fears.
And from their lessons seek and find
Instruction with an humble mind

My hopes with the dead, anon
My place with them will be
And I with them will travel on
Through all futurity;
Yet leaving here a name, I trust,
That will not perish in the dust.

विद्यानुरागी

–राबर्ट सदी

संग दिवंगत बीत रहे दिन,
मेरे चारों ओर उपस्थित,
जहां कहीं भी दृष्टि जाती,
हैं अतीत के दिग्गज पंडित।
वे मेरे मित्र हैं विश्वासी,
उनसे बात करूँ मैं नित प्रति।

उन संग सुख में आनन्द पाता,
कष्टों में पाता सान्त्वना,
जब भी कभी सोचने लगता
उनका मुझ पर ऋण है कितना,
कृतज्ञता के अश्रु निकलते,
गालों पर से होकर ढलते।

मेरे विचारों में वे रहते,
उनके संग अतीत में जाता,
गुण स्वीकारूँ, दोष नकारूँ,
आशा, भय मैं करता साझा।
सीख से उनकी लाभ उठाता,
विनम्रता से शिक्षा पाता।

उनसे ही मुझको आशायें,
मेरा स्थान उन्हीं संग होगा,
अनन्त काल तक अपनी यात्रा
मैं भी उनके साथ करूँगा।
निश्चित मेरा भी नाम रहेगा,
जो मिट्टी में नहीं मिलेगा।

Twinkle, Twinkle, Little Star

–Jane Taylor
English poetess

Twinkle, twinkle, little star,
How I wonder what you are!
Up above the world so high,
Like a diamond in the sky.

When the blazing sun is gone,
When he nothing shines upon,
Then you show your little light,
Twinkle, twinkle, all the night.

Then the traveller in the dark
Thanks you for your tiny spark;
He could not see which way to go
If you did not twinkle so.

In the dark blue sky you beep
And often through my curtain peep,
For you never shut your eye
Till the sun is in the sky.

As your bright and tiny spark
Lights the traveller in the dark,
Though I know not what you are,
Twinkle, twinkle, little star.

झिलमिल, झिलमिल, नन्हें तारे

—जेन टेलर

झिलमिल, झिलमिल, नन्हें तारे,
विस्मित हूँ तू है क्या, प्यारे!
धरती ऊपर उतने ऊँचे,
आसमान में हीरा जैसे।

जलता सूरज छिप जाता जब,
नहीं प्रकाशित कुछ करता जब,
तब तू नन्हीं चमक दिखाता,
झिलमिल, झिलमिल, रात बिताता।

अंधकार में तब कोई राही,
चमक का तेरी है आभारी,
अपनी राह वह जान न पाता,
यदि न तू यों चमक दिखाता।

टिम–टिम श्यामल नील गगन में
अक्सर झाँके मेरी चिलमन में,
आँख कभी तू बन्द न करता
जब तक सूरज नहीं निकलता।

तेरी नन्हीं तेज चमक में
राही देखे मार्ग तमस में
भले न जानूं क्या तू प्यारे!
झिल मिल, झिलमिल नन्हें तारे।

Love's Philosophy

P.B. Shelley
English Poet

The fountains mingle with the river
And the rivers with the ocean,
The winds of heaven mix for ever
With a sweet emotion,
Nothing in the world is single,
All things with a law divine
In one another's being mingle–
Why not I with thine?

See the mountains kiss high heaven,
And the waves clasp one another;
No sister-flower will be forgiven
If it disdain'd its brother,

And the sun light clasps the earth,
And the moon beams kiss the sea–
What are all these kissings worth,
If thou kiss not me?

प्रीति की रीति

–पी० बी० शैली

सरिता से जा मिलते निर्झर
मिलती सरिताएं सागर में
मंद समीर के सुमधुर झोंके
आ बंधते चिर आलिंगन में

भव में कहीं न कोई अकेला
मिलते सब, यह विधि की करनी
फिर न मिलूं क्यों तुझसे आकर
तू ही बता दे मुझे, सुनयनी।

देख, शैल हैं स्वर्ग चूमते
आपस में चुम्बित हैं लहरें
नहीं क्षम्य यदि कलियां कोमल
पुष्प–बंधुओं से मुख फेरें

धरती चुम्बित सूर्य रश्मि से
चूमती है नित सिंधु चांदनी
ये चुम्बन क्या सार यदि तू
आके न चूमे मुझे, सुनयनी।

La Belle Dame Sans Merci

–John Keats
English Poet

'O what can ail thee, knight-at-arms,
Alone and palely loitering?
The sedge has wither'd from the lake,
And no birds sing.

'O what can ail thee, knight-at-arms,
So haggard and so woe-begone?
The squirrel's granary is full,
And the harvest's done.

'I see a lily on thy brow
With anguish moist and fever dew,
And on thy cheeks a fading rose
Fast withereth too.'

'I met a lady in the meads
Full beautiful — a faery's child
Her hair was long, her foot was light,
And her eyes were wild.

'I made a garland for her head,
And bracelets, too, and fragrant zone;
She looked at me as she did love,
And made sweet moan.

'I sat her on my pacing steed
And nothing saw all day long,
For side long would she bend, and sing
A faery's song.

Cont....

निर्मम सुन्दरी

—जान कीट्स

'विपत पड़ी क्या तुझ पर योद्धा
व्यथित विचार रहा एकाकी
नष्ट हुई सेवार झील से
और न कोई गाए पाखी

'विपत पड़ी क्या तुझ पर योद्धा
हुआ क्लांत है, दुर्बल काफी,
सहेज लिया भंडार गिलहरी ने
और फसल भी खड़ी न बाकी

'तेरे मुख का कमल दिखाई
पड़ता म्लान वेदना ज्वर से,
विदा लिए जाती गुलाब की
लाली तेरे गालों पर से।'

'मुझे मिली एक युवती वन में
अति सुंदरी, अप्सरा बाला
केश घने लंबे, पद हल्के
आंखें करती थीं मतवाला

'गूंथ पुष्प दीं उसको मैंने
मालाएं वक्ष, कटि, बांह की
उसने मुझ पर चितवन फेंकी
और प्रेम युक्त मधुर आह की

'संग उसे ले निज घोड़े पर
मैंने कुछ नहीं और निहारा
क्योंकि गाती रही झुकी हुई
वह परियों का गीत प्यारा

क्रमशः.....

'She found me roots of relish sweet
And honey wild and manna-dew
And sure in language strange she said
"I love thee true".

'She took me to her elfin grot
And there she wept and sigh'd full sore;
And there I shut her wild wild eyes
With kisses four.

'And there she lulled me asleep,
And there I dream'd – Ah! woe betide!
The latest dream I ever dream'd
On the cold hill's side.

'I saw pale kings and princes too,
Pale warriors, death pale were they all
They cried – "La belle Dame sans Merci
Hath thee in thrall!"

'I saw their starved lips in the gloam
With horried warning gaped wide,
And I awoke and found me here
On the cold hill's side.

'And this is why I sojourn here
Alone and palely loitering,
Though the sedge is wither'd from the lake,
And no birds sing'.

'ले जाकर निज रंग कुटी में
आहें खींची, रोई सिसकी
चूम–चूम कर बंद किया
मैंने मादक पलकों को उसकी

'दुलरा कर फिर मुझे सुलाया
मैंने देखा स्वप्न भयंकर
वही स्वप्न बना है अन्तिम
मेरा इस शीतल पर्वत पर

'मैंने देखा राजा, राजकुमारों को
वीरों को, पीले, मुर्झाए
निर्मम सुंदरी ने बना लिया
निज दास तुझे, वे चिल्लाये

'मुझे चेताते उनके सूखे–
खुले होठों पर भय था छाया
निंद्रा टूटी मैंने स्वयं को
इस निर्जन पर्वत पर पाया

'यही वजह है मैं क्यों यहां पर
व्यथित विचर रहा एकाकी
नष्ट हुई सेवार झील से
और न कोई गाये पाखी।'

A Nation' Strength

–R.W. Emerson
American Poet

Not gold but only men can make.
A nation brave and strong—
Men who for truth and honour's sake
Stand fast and suffer long.

Brave men who work while others sleep,
Who dare while others fly—
They build a nation's pillars deep
And lift them to the sky.

राष्ट्र की शक्ति

—आर०डब्ल्यू० एमरसन

स्वर्ण नहीं अपितु व्यक्ति राष्ट्र को
सशक्त महान बनाते हैं,
स्वाभिमान और सत्य हेतु जो
दृढ़ रह, कष्ट उठाते हैं।

वीर कर्म रत रहते हैं जब कि अन्य आलस्य करें
वे साहस दिखलाते जब कि अन्य सभी छिप जाते हैं,
राष्ट्र—स्तंभों को पूरी गहराई, मजबूती से,
ऊपर उठाकर उनको ऊँचा, अंबर तक पहुँचाते हैं।

Noble Deeds

–H.W. Longfellow
American Poet

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And departing, leave behind us
Footprints on the sand of time.

Footprints that perhaps another,
Sailing over life solemn main,
A forlorn and shipwrecked brother,
Seeing, shall take heart again.

Let us be then up and doing,
With a heart for any fate,
Still achieving, still persuing,
Learn to labour and to wait.

जीवन वृत्त महापुरुषों के

—एच०डब्ल्यू० लांगफैलो

जीवन वृत्त महापुरुषों के
हमको यह स्मरण करायें
हम भी उन जैसा ही अपने
जीवन को अति उच्च बनाएं
और विदा लें इस धरती से
जब अपनी यात्रा पूरी कर
समय–डगर पर अपने पद चिन्हों
को हम अंकित कर जाएं।

कोई साथी जिसकी नौका
झंझाओं में ध्वस्त हुई हो
क्लांत, श्रांत हो, दिशा भ्रांत हो
हिम्मत जिसकी पस्त हुई हो
देख उन पद चिन्हों को वह
अपना डिगता धैर्य सम्हाले
और अनुसरण कर उनका
अपनी खोई मंजिल पा ले!

आओ उठें, कर्म करें हम,
हर नियति का करें सामना,
निरत अग्रसर प्रयासरत हों
सीखें धैर्य और श्रम साधना।

The Slave's Dream

–H.W. Longfellow
American Poet

Beside his ungathered rice he lay,
His sickle in his hand,
His breast was bare, his matted hair
Was buried in the sand.
Again in the mist and shadow of sleep
He saw his native land.

Wide through the landscape of his dreams
The lordly Niger flowed,
Beneath the palm trees on the plain
Once more a king he strode.
And heard the tinkling caravans
Descend the mountain road.

He saw once more his dark-eyed queen
Among her children stand,
They clasped his neck, they kissed his cheeks,
They held him by the hand!
A tear burst from the sleeper's lids
And fell into the sand.

And then at furious speed he rode
Along the Niger's bank;
His bridle-reins were golden chains,
And with a martial clank,
At each leap he could feel his scabbard of steel
Smiting his stallion's flank.

Cont....

दास का स्वप्न

—एच० डब्ल्यू० लांगफैलो

लिए दरांती दास लिटा था
कटे धान के पास खेत में
सीना नंगा, बाल धूसरित
सूखे उलझे दबे रेत में
निद्रा की धुंधली छाया में
पहुँच गया फिर से स्वदेश में।

उसको अपने स्वप्न क्षेत्र में
नदी नाइजर पड़ी दिखाई
तट पर वृक्षों तले खजूर के
फिर राजा बन गश्त लगाई।
उसे काफिले टिन–टिन करते
पहाड़ उतरते पड़े सुनाई।

उसने अपनी प्रिय रानी को
देखा, बच्चो बीच खड़ी थी
आ झूले लिपटे सब, चूमा
पुनर्मिलन की खुशी बड़ी थी
उमड़ दास की आंखों से तब
बूंद रेत में एक ढली थी।

फिर नाइजर के साथ साथ
उसने घोड़ा दौड़ाया सरपट
रास सुनहरी जंजीरों की
ध्वनि युद्ध–सी होती थी जब
हर टाप पर अश्व–कक्ष से
टकरा जाता फौलादी खड्ग।

क्रमशः.....

Before him, like a blood red flag,
The bright flamingoes flew,
From mor still night he followed their flight
Over plains where the tamarind grew,
Till he saw the roofs of Caffre huts,
And the ocean rose to view,

At night he heard the lion roar,
And the hyena scream
And the river-horse as he crushed the reeds
Beside some hidden stream;
And it passed, like a glorious roll of drums,
Through the triumph of his dream.

The forests with their myriad tongues
Shouted of liberty;
And the blast of the desert cried aloud
With a voice so loud and free,
That he started in his sleep and smiled
At their tempestuous glee.

He did not feel the driver's whip,
Nor the burning heat of day,
For death had illuminated the Land of Sleep,
And his lifeless body lay,
A worn-out fetter, that the soul
Had broken and thrown away.

तभी सामने उड़े फ्लैमिनगो
मानो रक्तिम–ध्वज फहराया
मैदानों में इसी उड़ान के
पीछे उसने दिवस बिताया
दीख पड़ी तब छतें बस्ती की
और समुद्र दृष्टि में आया।

रात्रि में तब शेर दहाड़ा
लकड़ बग्घे ने चीख मचाई
किसी छिपी धारा में हिप्पो
घास कुचलता पड़ा सुनाई
यह सब शोर उसे सपने में
नाद समान लगा सुखदाई।

जंगल अपनी लाख जुबानों
से मुक्ति–मुक्ति चिल्लाया
रेगिस्तानी आंधी ने भी
मुक्ति का ही शोर मचाया
उनके इस हर्षोल्लास पर
चौंक नींद में, वह मुस्काया।

रखवाले के कोड़े व्यर्थ थे,
दिन की तेज गरमी बेमानी,
उसकी नींद बनी चिर–निद्रा,
केवल देह पड़ी निष्प्राणी,
टूटी बेड़ी जैसी, जिसको
आत्मा तोड़ उड़ी अभिमानी।

There Rolls the Deep

–Alfred Lord Tennyson
English Poet

There rolls the deep where grew the tree,
O earth, what changes hast thou seen!
There where the long street roars, hath been
The stillness of the central sea.

The hills are shadows, and they flow
From, form to form, and nothing stands,
They melt like mist, the solid lands
Like clouds they shape themselves and go.

But in my spirit will I dwell,
And dream my dream, and hold it true,
For though my lips may breathe adieu,
I cannot think the thing farewell.

लहराता है सिन्धु जहाँ

—एल्फ्रेड लार्ड टैनिसन

लहराता है सिन्धु जहाँ जंगल होता था
पृथ्वी, तूने क्या–क्या परिवर्तन देखे हैं!
दौड़ रही हैं आज जहाँ कोलाहल मय सड़कें,
वहाँ कभी अति गहरा सागर सोता था।

पर्वत परछाई–सम रूप बदलते रहते,
भाँति–भाँति के रूप धारते, फिर मिट जाते,
ठोस भूमि होकर भी, धुंध समान छंट जाते,
बादल–सा आकार बनाकर ढलते रहतें

पर, मैं स्वयं के अन्तः में ही वास करूँगा,
सपने देखूंगा, चाहूंगा सच हो जायें।
भले ही मेरे होंठ अलविदा कह जायें,
कभी विदा लेने की मैं न सोच सकूंगा।

Break, Break, Break

–Alfred Lord Tennyson
English Poet

Break, break, break,
On thy cold gray stones, O sea!
And I would that my tongue could utter
The thoughts that arise in me.

O well for the fisherman's boy,
That he shouts with his sister at play!
O well for the sailor lad
That he sings in his boat at bay,

And the stately ships go on
To their haven under the hills
But O for the touch of a vanished hand
And the sound of the voice that is still!

Break, break, break,
At the foot of thy crags, O sea!
But the tender grace of a day that is dead
Will never come back to me.

पटक, पटक, तू अपनी लहरें

–एल्फ्रेड लार्ड टैनिसन

पटक, पटक, तू अपनी लहरें
शीत चट्टानों पर, हे सागर,
मैं भी काश! व्यक्त कर पाता
भाव, घुमड़ते मेरे अन्दर।

देखो, मछुआरे का बेटा
बहन संग खेल में शोर मचाता,
देखो, नाविक का बालक, जो
खाड़ी में निज नाव में गाता।

पर्वत नीचे पोताश्रय में
लौट आ रहे पोत राजसी,
हा! स्पर्श जो लुप्त हो गया,
कंठ–ध्वनि जो शान्त हो गई।

पटक, पटक, तू अपनी लहरें
पथरीले तट पर, हे सागर।
हा! अतीत के वे सुन्दर दिन
आयेंगे अब नहीं लौट कर।

I've loved Flowers that fade

–**Robert Bridges**
English Poet

I have loved flowers that fade,
Within whose magic tents
Rich hues have marriage made
With sweet unmemoried scents.

A honeymoon delight,
A joy of love at sight,
That ages in an hour,
My song be like a flower.

I have loved airs that die
Before their charms is writ
Along a liquid sky.
Trembling to welcome it.

Notes, that with pulse of fire
Proclaim the spirit's desire,
Then die, and are no where,
My song be like an air.

Die, song, die like a breath,
And wither as a bloom,
Fear not a flowery death,
Dread not an airy tomb!

Fly with delight, fly hence!
It was thine love's tender sense
To feast, now on thy bier
Beauty shall shed a tear.

उन फूलों से प्यार मुझे

—राबर्ट ब्रिज़ेज

उन फूलों से प्यार मुझे जो मुरझा जाते हैं
जिनके रंग निराले, मनहर
भीनी गंध से प्रीति जुड़ाकर
फूलों के मधु—मण्डप में ही
ब्याह रचाते हैं।

मेरे गीत भी हों फूलों से
छोटे से जीवन में ही जो
आनन्दित करके इस जग को
छितरा जाते हैं।

मुझे प्यार संगीत—स्वरों से
जो खो जाते हैं
शून्य लीन होने से पहले
चुभन वेदना की मर्मान्तक
सुख दुःख की अनुभूति जग तक
जो पहुंचाते हैं।

मेरे गीत हों सुर लहरी से
जो उर—पीड़ा को स्वर देकर
जग पर उसकी अभिव्यक्ति कर
फिर सो जाते हैं।

मेरे गीत, फूल—सा कुम्हला
स्वर—सा खो जाना
इन जैसी ही मुत्यु पाकर
तुम मत घबराना
अल्प समय में ही तुमने
यहां आनन्द बरसाया
जीवन को मधु सिक्त किया
रंग प्रेम का छिटकाया
तुम्हें स्मरण कर सुंदरता के
नयन छलक आते हैं
उन फूलों से प्यार मुझे
जो मुरझा जाते हैं।

Requiem

–R.L. Stevenson
English Poet

Under the wide and starry sky,
Dig the grave and let me lie,
Glad did I live and gladly die,
And I laid me down with a will.

This be the verse you grave for me,
Here he lies where he longed to be,
Home is the sailor, home from sea,
And the hunter home from the hill.

शान्ति–गीत

–आर०एल० स्टेवेन्सन

तारों भरे खुले नभ नीचे
बना कब्र तुम मुझे लिटाना
हर्षित जिया, विदा भी हर्षित,
इच्छित ही है मेरा जाना।

लिखना यह तुम कब्र पर मेरी–
शयन यहीं पर इसने चाहा,
सागर से नाविक, पर्वत से
लौट शिकारी घर को आया।
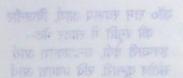
कवि परिचय

नाम	:	वी०पी० गुप्ता
जन्म	:	7 जनवरी, 1935, बिजनौर (उ०प्र०)
आत्मज	:	स्व० रामचन्द्र गुप्ता (वकील) एवं स्व० श्रीमती शान्ति देवी
शिक्षा	:	प्रारम्भिक शिक्षा बिजनौर में, आगे देहरादून में, डी०ए०वी० कॉलेज से एम०ए० (अंग्रेजी), एम०ए० (समाजशास्त्र), बी०टी० उत्तीर्ण किया।
कार्यक्षेत्र	:	शिक्षण व पत्रकारिता।
लेखन	:	तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं – मधुबन, ताल–बेताल तथा फूल हरसिंगार के। चौथी पुस्तक आपके हाथों में है। अंग्रेजी व हिन्दी, दोनों भाषाओं में विभिन्न विषयों पर गद्य व पद्य में लेखन एवं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशन, समय–समय पर आकाशवाणी से प्रसारण।
पता	:	जाटान स्ट्रीट निकट अग्रवाल धर्मशाला, बिजनौर, उ०प्र० 9897673720, 8979574567

Published By :

ANU BOOKS

New Delhi • Meerut • Glasgow (UK)
E-mail : anubooks123@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-4007472, Mob. : 99978 47837 (India)
+44 758 651 3591 (UK)

ISBN : 978-81-948985-1-1

2020 ₹ 195 /-